Roll No. .....
Signature of Invigilator .....

Paper Code
BA-212

पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali

Examination May – 2018

B.A. Yoga Science, (Semester : Second)

संस्कृत

संस्कृत–साहित्यम्

Time: 3 Hours **Max. Marks: 75**

नोट : यह प्रश्नपत्र पचहत्तर (75) अंकों का है जो तीन (03) खंडों क, ख, तथा ग में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड–क
(दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पांच (05) दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न दिए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पंद्रह अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(3×15=45)**

1. 'मुण्डकोपनिषद्' के अनुसार ब्रह्म किन-किन उपायों से प्राप्त होता है? और किन-किन उपायों से प्राप्त नहीं होता है? विवेचना कीजिए।
2. पञ्चतन्त्र-स्थित 'शालङ्कायन' नामक व्यक्ति की कथा का वर्णन कीजिए।
3. भर्तृहरि के अनुसार सत्पुरुषों के चरित्र का वर्णन विस्तार से करें।
4. स्वामी विवेकानन्द ने न्यूयार्क (अमेरिका) में मुख्य रूप से क्या-क्या कार्य किए? विस्तारपूर्वक लिखें।
5. अनुष्टुप् एवं सग्विणी छन्द का लक्षण एवं उदाहरण बताइये।

खण्ड–ख
(लघु–उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में छः (06) लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पांच अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(4×5=20)**

1. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या करें –
   परीक्ष्य लोकान्कर्मचिताब्ब्राह्मणो निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन।
   तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्।।
2. निम्नलिखित गद्य का हिन्दी में अनुवाद करें –
   अथ तं चौरोऽब्रवीत् ब्राह्मण! त्वामेवायं राक्षसो भक्षयितुमिच्छति इति। राक्षसोऽप्याह-ब्राह्मण! चौरोऽयं गोयुगं तेऽपहर्तुमिच्छति। एवं श्रुत्वोत्थाय ब्राह्मणः सावधानो भूत्वेष्टदेवतामन्त्रध्यानेनात्मानं राक्षसाद्, उद्गूर्णलगुडेन च चौराद् गोयुग ररक्ष।
3. निम्नलिखित श्लोक की व्याख्या सप्रसंग करें –
   अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां तु विमानना।
   त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम।।
4. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या करें –
   पापान्निवारयति योजयते हिताय, गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।
   आपद्गतं च न जहाति ददाति काले, सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।।

5. 'त्रोटक' छन्द का लक्षण एवं उदाहरण लिखें।
6. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसङ्ग व्याख्या करें –
साद्ध्वा जगदनित्यत्वं नित्यत्वं ब्राह्मणस्तथा।
महावाक्यरहस्यं च तेन सम्यगनावृतम्।।

खण्ड–ग
(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस(10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं। **(10×01=10)**

1. 'यम' के अन्तर्गत है .....
(अ) सन्तोष (ब) स्वाध्याय
(स) ब्रह्मचर्य (द) तप
2. संन्यासदीक्षा के उपरान्त स्वामी विवेकानन्द ने किसका नाम 'अभयानन्द' रखा था .....
(अ) मिस्टरलैण्डर्स्ग का (ब) मिस् एलिजाबैथ डचर का
(स) मेरीलुइस् का (द) इनमे से किसी का नहीं
3. 'मुण्डकोपनिषद्' में कुल कितने खण्ड हैं .....
(अ) पांच (ब) चार
(स) तीन (द) छः
4. मुण्डकोपनिषद् में आत्मा को क्या कहा गया है .....
(अ) शरः (ब) धनुः
(स) लक्ष्यम् (द) इनमें से कोई नहीं
5. 'भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः' किस मुण्डक में है .....
(अ) प्रथम (ब) द्वितीय
(स) तृतीय (द) इनमें से कोई नहीं
6. 'पापान्निवारयति योजयते हिताय' नीतिशतक के अनुसार यह किसका लक्षण है .....
(अ) सद्गुरु का (ब) सत्यपुरुष का
(स) सत्सङ्गति का (द) सन्मित्रका
7. नीतिशतक के रचयिता कौन हैं .....
(अ) नारायण पण्डित (ब) विष्णुशर्मा
(स) भर्तृहरि (द) कदारभट्ट
8. पञ्चतन्त्र के रचयिता कौन हैं .....
(अ) भर्तृहरि (ब) विष्णुशर्मा
(स) कालिदास (द) नारायण पण्डित
9. विष्णुशर्मा के तन्त्रों की संख्या है .....
(अ) चार (ब) तीन
(स) छः (द) पांच
10. 'काकोलूकीयम्' कौन-सा तन्त्र है .....
(अ) तृतीयम् (ब) द्वितीयम्
(स) प्रथमम् (द) षष्ठम्

----------x----------